शिव गरिमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई–पत्रिका

अंक -5 : माह-मई 2023

आशीर्वाद :

प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा

प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट

सद्गुरु-संदेश

गणपति पूजा

सभी साधकों को जय श्री कृष्ण।

पूर्व के किसी अनुभव के कारण मैं गणपति जी की पूजा मानस पूजा के प्रारंभ में करती हूं। अभी 8 दिन पहले ही मुझे गणेश जी के अत्यंत अद्भुत दर्शन हुए और उन्होंने जो मार्गदर्शन दिया तथा उसके बाद मेरा जो मत बना वह आप सबके साथ साझा कर रही हूं।

गणपति स्थापना का प्रचलन महाराष्ट्र के साथ-साथ लगभग सभी स्थानों में बढ़ गया है। यह अच्छी बात है। किंतु कुछ सावधानियां पालनीय हैं। गणपति की मूर्ति ज्यादा से ज्यादा साढ़े तीन फीट की हो सकती है, इससे ज्यादा ऊंची मूर्ति लगाना उनकी अवहेलना ही है। दस दिन बाद उसे विसर्जित करना भी परेशानी भरा होगा। कभी सिर बाहर रह जायेगा तो कभी पैर या अन्य कोई अंग। यह सम्मान है या अपमान? विसर्जन के लिए तालाब या नदी

का पानी कितना पवित्र होता है? कितने ही लोग तो छोटी सी मूर्ति स्थापित करके फिर उसका विसर्जन किसी बाल्टी, तगारी या किसी पात्र में करते हैं, यह कितना हास्यास्पद लगता है। इसके बजाय अनिवार्यतः कुएं में ही विसर्जन होना चाहिए क्योंकि वह गहरा भी होता है और पावन भी।

यह स्वाभाविक है कि भक्त हर साल गणेश जी की मूर्ति में वृद्धि करते हुए उसकी ऊंचाई बढ़ाते जाते हैं। गणपति समृद्धि के देवता हैं ऊंचाई बढ़ाने के स्थान पर हर साल कीमत बढ़ाते हुए और गुणवत्ता वाली मूर्ति लाना ठीक है। ज्यादा धन लगाकर उसकी अच्छी सजावट हो, यानी कद नहीं कीमत बढ़ा सकते हैं। एक बार जितने की मूर्ति लाये फिर उससे कम की नहीं लानी है।

दीपक में जो बाती बनाते हैं तो कई बार बड़ी बन जाती है। तेल ज्यादा जलेगा ऐसा सोचकर लोग बाती कम या छोटी कर देते हैं, यह उचित नहीं है। यह भी मूर्ति की अवहेलना ही है। एक बार दीपक प्रज्वलित करने के बाद न बाती छोटी करनी है और न लौ को कम करना है। दीपक कभी स्वयं बुझाना नहीं है उसे स्वयं ही ठंडा होने दें। यदि घर में दीपक जलाएं तो उसे सुरक्षित रखें। उसके कारण

कहीं आग न लगे। दीपक जलाकर घर बंद करके कहीं न जाएं। असावधानीवश आग लग जाए तो अनेक अनिष्टकारी आशंकाएं पैदा होती हैं। देखरेख की पूरी व्यवस्था हो तभी अखंड दीपक जलाएं अन्यथा सुबह-शाम एक-एक बार ही दीपक कर लें। यहां यह भी ध्यान देने की बात है कि माताजी का अखंड दीपक हो तो वह तेल का तथा अन्य देवों के, गुरुदेव के घी का दीपक ही लगायें। माताजी की व हरप्रकार की आरती में घी का दीपक ही लगाना है।

सभी को आशीर्वाद।

आपकी अपनी
प्रभु बा

सहज अभिव्यक्ति

लगभग सभी ग्रंथों में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु व महेश कहा गया है। ब्रह्मा का कार्य है रचना करना। किसी भी निर्माण का दायित्व ब्रह्मा का है। विष्णु को उस रचना का पालन-संचालन करना है तथा महेश के लिए उसके कल्याण का विधान किया गया है। यह तीन विभाग हैं जो सनातन से चल रहे हैं। सद्गुरु यह तीनों कार्य एक साथ अकेले ही कर सकते हैं इसलिए उन्हें इन तीनों के साथ-साथ परब्रह्म भी कहा गया है।

कहते हैं की ब्रह्मा जो भाग्य में लिखते हैं उसकी पूर्ति विष्णु करते हैं तथा उसकी संपूर्णता महेश के हाथों होती है। परंतु सद्गुरु तो ब्रह्मा द्वारा लिखित भाग्य को भी बदलने की सामर्थ्य रखते हैं। इसलिए वह परब्रह्म है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की आराधना करने पर वे प्रसन्न होकर उद्धार करते हैं। पर सद्गुरु तो साधकों को स्वयं ही स्वयं का उद्धार करने की कुंजी प्रदान कर देते हैं।

उक्त तीनों देव भक्ति द्वारा भक्तों को सर्व सुख व मुक्ति प्रदान करते हैं परंतु सद्गुरु तो साधक को स्वयं जैसा बना देते हैं ताकि वह स्व के साथ-साथ पर का भी कल्याण कर सके इसलिए वह परब्रह्म है।

ऐसे विलक्षण सद्गुरु की प्राप्ति जिसे हो जाती है वह कितना सौभाग्यशाली होगा? सच में हम सभी किस्मत के धनी हैं कि सदेह सद्गुरु सान्निध्य पाने का प्रसाद सहज ही मिल रहा है। हमें कोई विशेष प्रयास नहीं करने पड़े ऐसे सद्गुरु को पाने हेतु। इस भाग्य को स्थायी व सनातन बनाए रखने के लिए हम इस परब्रह्म द्वारा प्रदान की गई साधना में रत रहें तो यह प्रक्रिया परिपूर्ण होगी, ऐसा सद्गुरु परंपरा का स्वभाव रहा है।

आपका ही
स्वामी गुरुराजेश्वरानंद
शिवपुरी आश्रम

साधन-संपदा

एकनिष्ठता

नीति व भक्ति साहित्य में एक बहुप्रचलित पदांश है– 'एके साधे सब सधे।' यानी एक मूल को साध लें तो हर अंग विकसित हो जाता है। यह मूल अध्यात्म के क्षेत्र में सद्गुरु को ही कहा गया है। सद्गुरु को साधना अर्थात सद्गुरु में पूरी निष्ठा रखना ही नहीं है वरन् मूलतः उसी में निष्ठा रखना है। इसे ही एकनिष्ठता कहा जाता है।

यहां पर यह प्रश्न उठ सकता है कि सद्गुरु के प्रति निष्ठा तो है पर हम समय-समय पर अन्य देवों, अन्य कर्मकांडों अन्य व्यक्तियों में भी निष्ठा रखें तो क्या हर्ज है? यहां हमें यह समझना होगा कि निष्ठा, आस्था व विश्वास भिन्न-भिन्न अर्थ वाले शब्द हैं। विश्वास किसी भी सच्चे व श्रेष्ठ चरित्र पर किया जा सकता है। आस्था हमारा स्वभाव है जो देख, सुनकर व कभी -कभी अनुभव करके होती है। निष्ठा का इनसे ज्यादा गहरा अर्थ है।

विश्वास है और यदि वह फलित नहीं हो पाता है तो उसमें अविश्वास की संभावना हो सकती है। आस्था है और किंतु मन के अनुरूप कुछ नहीं हुआ तो संभव है कि अनास्था होने लगे। पर निष्ठा का अर्थ है कि चाहे मेरा वांछित हो या न हो, मेरी कसौटी के खांचे में वह बात आए या न आए फिर भी मैं पूरी मनोभावना से किसी के प्रति अनुरक्त रहूं। सद्गुरु के प्रति विश्वास व आस्था तो रहते ही हैं पर निष्ठा और कहना चाहिए एकनिष्ठता अपेक्षित

है। मैं और मेरा सद्गुरु, हम दोनों के मध्य न कोई है और न हो सकता है। मुझे अपने या अपनों के लिए कुछ निवेदन करना है तो बस सद्गुरु को ही। यदि कोई कामना है भी तो वह भी सद्गुरु से ही। मेरे लिए कोई ग्रंथ, कोई तीर्थ, कोई अवतार है तो बस मेरा सद्गुरु। वही मेरे लिए प्रमुख है बाकी सब गौण। इसका आशय किसी का खंडन-मंडन नहीं है बल्कि सद्गुरु में अनंत निष्ठा का भाव है। जितने भी अवतारी व महापुरुष हुए हैं उन्होंने भी सद्गुरु से ही पाया है और सद्गुरु को ही गाया है। जितने ग्रंथकार व तीर्थ प्रणेता हुए हैं वे भी सारा श्रेय अपने सद्गुरु को ही देते रहे हैं। इसलिए सद्गुरु मूल में है। ऐसे मूल को छोड़कर मैं क्यों अन्य पर आश्रित होऊं?

आस्था, विश्वास और श्रद्धा सबमें रखें पर निष्ठा तो सद्गुरु में ही हो। निष्ठा का आशय है सद्गुरु वचनों का अक्षरशः पालन, उनके बताए साधन-मार्ग का अनुसरण, उनकी सेवा के प्रत्येक अवसर की सिद्धता, उनकी सत्ता में ही अपना अस्तित्व मानने की प्रबल भावना।

महत्व मेरा नहीं, मेरे सद्गुरु का है। ऐसे विलक्षण तीर्थ, ग्रंथ, अवतार एवं श्रद्धापात्र को छोड़कर कहां जाना है? क्यों जाना है? कहीं जाने की आवश्यकता सद्गुरु को लगे तो उनकी आज्ञा से ही जाऊं। उनकी वाणी मेरे लिए मंत्र है, उनका दर्शन मेरे लिए यात्रा है, उनका दृष्टिपात मेरे लिए कुबेर का खजाना है। ऐसा भाव व निष्ठा रखकर ही सद्गुरु से कुछ पाया जा सकता है। गुरु गीता में स्वयं शिव, पार्वती को कहते हैं –

'एको देव एकधर्म, एकनिष्ठा परंतपः।
गुरोः परतरं नान्य, नास्ति तत्वं गुरोः परं।।

प्रभु बा का अनुभव

मैं एक बार अपनी सासू जी के पास रहने के लिए 1 महीने के लिए गांव गई थी। सासू जी अकेले गांव में रहते थे और खेती-बाड़ी की देखभाल करते थे। मेरे पतिदेव के अलावा तीन और उनके पुत्र थे किंतु कोई भी उन्हें खर्चे के लिए पैसा नहीं देते थे। वे पत्र भी लिखते रहते थे किंतु कोई ध्यान नहीं देता था। जब मैं गांव गई तब यह बात ध्यान में आई। उस समय पैसे तो मेरे पास भी नहीं थे पर मन बहुत था। मैं जब वापस मुंबई लौट गई तो 1 दिन सासू जी का पत्र आया। उन्होंने लिखा कि बहू तुम्हारे जाने के बाद मैंने अलमारी खोली तो उसमें 1-1 रुपए के नोटों के 5 बंडल मिले यानी कुल 500 रुपए थे। मेरे पास तो पैसे थे नहीं शायद तुम्हारे रह गए होंगे। मैं उनको संभाल के रखती हूं अगली बार तुम आओगी तब सौंप दूंगी। आलमारी में नोट बैंक की पेकिंग में थे उन पर कुंकुम लगा था और मोगरे की खुशबू आ रही थी। मैंने वापस पत्र लिखा कि मेरे पास तो पैसे थे नहीं इसलिए वो मेरे नहीं है। आपको जरूरत है तथा कोई देता नहीं है इसलिए आप उनका उपयोग कर लें।

सासू जी के पास उनके सहयोग के लिए एक महिला रहती थी और रात को भी वहीं सोती थी। कुछ दिन बाद उनका पत्र आया कि रात को उन्हें सपना आया और तुम्हें

यानी मुझको द्वार पर खड़े हुए देखा। मेरे हाथों में कोहनी तक सोने और जवाहरात से जड़ी हुई चूड़ियां थीं। हाथ में अनाज फटकने का सूपड़ा था तथा उसमें सोने की मोहरें, माणक-मोती थे और नीचे गिर रहे थे। जैसे ही मैं हाथ से सूपड़े को झटकती तो झनझनाहट के साथ वे बजते, गिरते थे। उन्होंने लिखा कि साथ वाली महिला की भी नींद उचट गई और हम दोनों ने उस धन को दोनों हाथों से बटोरा। बहू तुम तो साक्षात् देवी हो।

तब गांव में हमारे खेती तो बहुत थी पर करता कोई नहीं था। बटाई पर दी जाती थी। आधा अनाज सासू जी को मिलता था। करीब महीने भर बाद सासू जी का एक और पत्र आया कि बहू, शुरू से ही हर साल करीब 14-15 क्विंटल गेहूं आता है इस बार तुम आकर गई तो पहली बार 32 क्विंटल गेहूं आया है। तुम तो अन्नपूर्णा हो। इष्टदेव व सद्गुरु कृपा से उनके अनुभवों ने उनमें उल्लास भर दिया। मुझे भी लगा कि कैसे सद्गुरु बिना बताए, बिना जताए काम साध लेते हैं।

प्रत्याहारं चेन्द्रिययजनं, प्राणायां न्यासविधानं।
इष्टे पूजा जप तप भर्क्ति, न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं।।

भावार्थ - प्रत्याहार (योग के 8 अंगों में से एक अंग जिसमें इंद्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण करने का अभ्यास किया जाता है) और इंद्रियों का दमन करना। प्राणायाम (श्वास व प्रश्वास के संयम से चित्त की चंचलता से निवृत्त होने का अष्टांग योग का एक प्रकार), न्यास-विन्यास (पूजा की एक विधि के अनुसार देवता के विभिन्न अंगों का ध्यान करते हुए मंत्र पढ़कर उन पर विशेष वर्णों का यथा स्थान स्थापन करना), अपने इष्ट देव की पूजा करना, इष्ट देव या अन्य को प्रसन्न करने हेतु जप करना, तप (व्रत, नियम जो चित्त शुद्धि हेतु हो उनका पालन व साधन) करना व अपने इष्ट की भक्ति करना ये सभी कर्म अत्यंत पवित्र हैं तथा मानव योनि के लिए उद्धारक स्वरूप हैं। किंतु वृहद विज्ञान परमेश्वर तंत्र के अंतर्गत त्रिपुरा शिव संवाद में स्वयं शिव कहते हैं कि इनमें से कोई भी, किसी भी प्रकार से सद्गुरु से बढ़कर नहीं है।

आसन का उपयोग

हमें दीक्षा के साथ ही गुरुदेव द्वारा शक्तिपात किया हुआ आसन मिला है। इस आसन के बारे में एक खास धारणा है कि यह सद्गुरु की गोद है। इसी गोद में बैठकर साधक जीव से शिव तक की यात्रा सरलता से कर सकता है। इसलिए आसन मात्र बैठने का कपड़ा नहीं है इसका महत्व इसी से प्रतिपादित है।

यह स्वाभाविक है कि आसन का उपयोग करते करते यह गंदा हो जाता है। इस अवस्था में इसे धोना नहीं है। धोने से आसन में समाहित शक्ति का क्षय हो जाता है। गंदा होने पर साधक को आश्रम से या अन्य स्थान से पीला रेशमी कपड़ा लेकर आसन पर सिलवा देना चाहिए। यदि सद्गुरु के समक्ष हैं तो कपड़े को उनसे स्पर्श करवा लें अन्यथा तो अपने स्तर पर भी कपड़ा चढ़ा सकते हैं।

आसन को पूरे सम्मान से उपयोग में लेना है। उसे यत्र तत्र डालते नहीं रहना है इसके लिए यथासंभव थैली का उपयोग करें। आसन की थैली में साधन संबंधी सामग्री ही रखी जानी चाहिए। आसन बिछाते व उठाते समय उसे नमन करना चाहिए। गुरुदेव के सम्मुख जब भी सत्संग हो, केंद्र पर या अन्यत्र सत्संग हो, ध्यान हो या साधन संबंधी जो भी कार्य हो तब आसन पर बैठना ही चाहिए। यात्रा के दौरान या अन्य दिनचर्या के कार्यों के समय आसन का उपयोग न करें।

अपने स्तर पर कोई नया आसन तैयार नहीं करना है। साधन के लिए वही आसन मान्य है जो सद्गुरु के स्पर्श से या आश्रम से लिया गया है। हां यदि आसन के पतलेपन के कारण बैठने में कोई दिक्कत हो तो नीचे मोटा ऊनी कपड़ा रखा जा सकता है। इसे आसन के साथ सिलना नहीं है।

यदि अपना आसन गुम जाए तो आश्रम से पुनः नया आसन प्राप्त कर लें। किसी कारण से आसन के जलने एवं फट जाने पर उसका विसर्जन प्रवाहमान जल में किया जाना चाहिए। यदि अपने आसन पर कोई अन्य बैठ गया हो तो गुरु मंत्र की एक माला करने के बाद आप उपयोग कर सकते हैं।

आसन का अर्थ ही है कि हमें गुरुदेव ने साधक का दर्जा दिया है। इस अर्थ में हमें उनकी कसौटी पर खरा उतरना है। इसका रोजाना उपयोग होना ही साधकत्व का प्रमाण है। अपने साधन के अलावा अन्य जगहों पर जैसे कथा, प्रवचन, भजन, अनुष्ठान आदि में गुरुदेव द्वारा दिए गए आसन का उपयोग नहीं करना है। यह शक्तिपात परंपरा के साधन के लिए ही है।

यदि हम आसन पर बैठे हैं और किसी कारण से खड़ा होना हो तो पैर आसन पर रखे हुए खड़े न हों। कुछ समय के लिए उठते हैं तो आसन को थोड़ा मोड़ लें।

आसन एक जैसे होते हैं इसलिए ये बदल न जाए इस हेतु कोई पहचान का निशान या नाम थैली पर लिख सकते हैं।

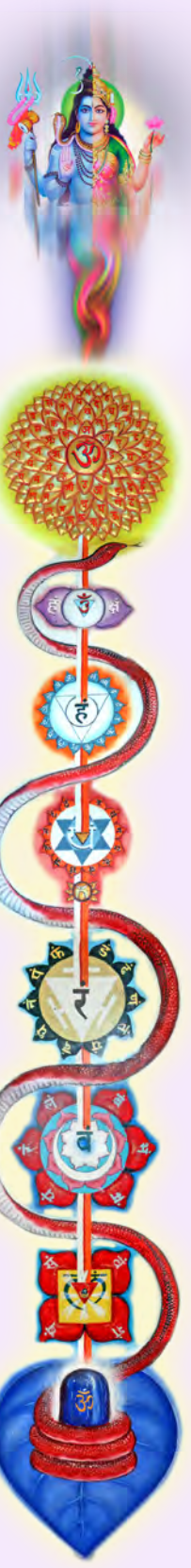

पति व पत्नी यदि दोनों साधक हैं और किसी एक का देहांत हो जाए तो दूसरे का आसन उपयोग कर सकते हैं। यदि उपयोग न करें तो उसे जल में प्रवाहित कर दें।

जिन्हें वायु विकार रहता है वे अपने आसन पर एक साफ रूमाल बिछा कर बैठें।

मासिक धर्म से दूषित आसन का भी विसर्जन करना चाहिए। स्त्री पुरुष संसर्ग के बाद स्नान किए बिना आसन का उपयोग न करें। सूतक व सोयर में भी आसन का उपयोग वर्जित है। जब भी बाहर से आएं और आसन पर बैठना है तो पैर धोकर ही बैठना चाहिए। यदि किसी कारण से नया आसन लेना हो तो पुराने वाले आसन को उसके नीचे सिल दें। उपर्युक्त बातें पालते हुए हम आसन की गरिमा को बनाए रख सकते हैं।

लक्ष्य की ओर

जिज्ञासा-समाधान

श्रीमती नीलू बारी, रायपुर

प्रश्न : बच्ची को बहुत छोटी आयु में गुरुदेव से दीक्षा मिली थी अब वह बड़ी हो गई है तो क्या उसे वापस दीक्षा दिलानी होगी?

उत्तर : हमारे गुरुदेव ने गुरु परंपरा के आदेश से पिछले कुछ वर्षों में कई छोटे बच्चे बच्चियों को मंत्र दीक्षा प्रदान की थी। वे बच्चे बच्ची साधक परिवार से हैं तथा उनके घर का वातावरण भी साधनमय है। गुरुदेव को उन बच्चे बच्चियों में आध्यात्मिक संभावना नजर आई तथा उनके अभिभावक उस सद्गुण को पोषण देंगे इस कारण से कान में मंत्रोच्चार करके अथवा मंत्र कार्ड देकर दीक्षा प्रदान की थी एवं आसन भी दिया था।

कई बच्चे बच्ची तो 1 वर्ष से कम आयु के भी रहे होंगे, उनसे बड़े और ज्यादा से ज्यादा 10-11 वर्ष के रहे हैं।

उन्हें उस समय दिया गया मंत्र भी याद नहीं रहा होगा। कुछ को मंत्र कार्ड भी दिया गया था किंतु हो सकता है कि असावधानीवश गुम हो गया हो। कुछ को शक्तिपात दीक्षा भी दी गई थी पर संकल्प पत्र नहीं दिया जा सका था इसलिए उनके पास ध्यान मंत्र नहीं था। इसलिए उन बच्चे बच्चियों का साधन अवरुद्ध सा हो गया था। माता-पिता भी शायद इस संबंध में सजग नहीं रह पाए होंगे। ऐसे बच्चे बच्चियों की 11 वर्ष की आयु के बाद शक्तिपात दीक्षा होनी थी। एक तरह से सामान्य भाषा में कहा जाए तो बचपन में कच्ची दीक्षा हुई थी और अब पक्की दीक्षा होनी है।

ऐसे साधक बच्चे बच्ची यदि अनुरोध करें तो उन्हें शक्तिपात दीक्षा प्रदान की जाती है। हर एक अभिभावक को याद रख कर यह दीक्षा समय पर दिलानी चाहिए। इसके बाद पत्र द्वारा उस साधक बच्चे बच्ची को जप मंत्र व ध्यान मंत्र मिल जाता है। उनका नियमित साधन प्रारंभ हो जाता है। अतः दोनों प्रकार की दीक्षाओं का अंतर समझते हुए बाल साधकों को 11 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर शक्तिपात दीक्षा दिलानी चाहिए। जो बाल साधक 11 वर्ष से अधिक आयु के हैं उन्हें सीधे शक्तिपात दीक्षा दी जाती है।

ऊँची उड़ान

साधकों के अनुभव

1. श्रीमती बिक्की सिंह (दीप्ति सिंह), बिलासपुर

शादी के पश्चात मुझे एक बेटी हुई। उसके बाद गर्भ में एक संतान आई। मेडिकल जांच में वह दोषपूर्ण गर्भ था इसलिए परिवार की अनुमति और चिकित्सकों के निर्णय के अनुसार गर्भपात करा दिया गया। उसके बाद फिर गर्भवती हुई और 3 महीने के बाद जब उसकी जांच कराई गई तो डॉक्टरों ने बताया कि बच्चा असामान्य है तथा उसके अंग विकसित नहीं है, वैसे पूरी जांच तो 5 महीने बाद ही संभव होगी।

संयोगवश इन्हीं दिनों सद्गुरु राजयोगी प्रभु बा का शिव त्रिलोचन आश्रम चपोरा में पधारना हुआ। मैंने दर्शन किए तथा सारी बात उन्हें बताई। गुरुदेव ने कहा सब ठीक होगा और भस्म की पुड़ियाएं दीं। जब 5 महीने बाद गर्भ की जांच की गई तो डॉक्टरों ने बताया कि बाकी सब ठीक है किंतु इसका चेहरा स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहा है इसलिए जब यह हलचल करेगा तब सही जांच होगी। वापस जांच करने पर मुझे बताया गया कि इसके चेहरे पर नाक की बनावट के बजाय केवल एक छेद है। सिर की हड्डी भी नहीं है बच्चा

विकलांग है, यह जन्मेगा तो मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होगा। कानूनन आप गर्भपात करा सकती हैं। मैंने डॉक्टर से कहा पहले भी एक गर्भपात ऐसे ही करा चुकी हूं। अब मैं गर्भपात नहीं कराऊंगी। संतान जैसी भी होगी मैं उसको जन्म दूंगी। मुझे विकलांग व्यक्ति की पीड़ा मालूम है क्योंकि मेरा एक देवर और एक ननंद विकलांग है। समाज व परिवार ऐसे विकलांगों को पूरे मन से स्वीकार नहीं कर पाता है। फिर भी मैं सबसे छिपाकर उसे जन्म देना चाहती थी। यह बात मेरे अलावा केवल मेरी मां जानती थी।

मुझे गुरुदेव पर पूरा विश्वास है इसलिए उनके द्वारा दी गई भस्म को मैं पूरे गर्भकाल तक सेवन करती रही। जब प्रसव के लिए मुझे हॉस्पिटल ले जाया गया तो मैंने कहा कि संतान होते ही पहले उसका चेहरा मुझे दिखाना। यदि वह ठीक हुआ तो सबको दिखाना नहीं तो मैं अकेले रहकर उसका पालन पोषण करूंगी। प्रसव के बाद मैंने पूछा कि मेरी संतान का मुंह मुझे दिखाओ। स्टाफ वाले बोले सामान्यतः सबको यह जिज्ञासा रहती है कि बच्चा हुआ या बच्ची? तुम बार-बार उसके चेहरे के बारे में क्यों पूछ रही हो। बच्चे को मेरे सामने लाए और कहा देखो तुम्हारा बच्चा सुंदर तो है। मुझे उसका चेहरा देखते ही गुरुदेव की कृपा का गहराई तक एहसास हुआ। यद्यपि बच्चा हर साल एक बार बीमार होता है और उसे भर्ती कराना पड़ता है किंतु बाकी दिनों में वह स्वस्थ व क्रियाशील है। गुरुदेव ने अपनी कृपा से उसे विकलांग से सकलांग बना दिया तो आगे उसे स्वस्थ भी करेंगे ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। मेरे गुरुदेव बहुत समर्थ हैं।

2. नैतिक शुक्ला, बांसवाड़ा

पहले मैं जयपुर में जॉब करता था। जब जब भी समय मिलता तो अपने घर बांसवाड़ा आता रहता था। एक बार की घटना है कि मैं जयपुर बस स्टैंड पर आया। वहां से बांसवाड़ा की कोई सीधी बस नहीं थी इसलिए जोधपुर जाने वाली बस में अजमेर तक के लिए बैठ गया। थकान के कारण तुरंत नींद आ गई। बस में कोई पहचान वाला भी नहीं था इसलिए किसी से कोई बातचीत भी नहीं करनी थी। कोई 2 घंटे बाद एक भयंकर झटका लगा और मेरा सिर ड्राइवर सीट के पीछे केबिन से जोर से टकराया। प्राइवेट ट्रावेल्स बस थी। हड़बड़ा कर आंखें खुली तो देखा कि मेरे पास बैठी एक सवारी का सिर टीवी में फंसा हुआ था। थोड़ा ध्यान से देखा तो 2-3 सवारियां गेट के पास पड़ी हुई थी। जिसे देखो वही लहूलुहान था। गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो चुकी थी और अफरा तफरी मची थी। मैं उठा और मैंने गेट का लॉक खोला। बाहर निकल कर देखा तो बस एक खाई में पड़ी थी और रेत के टीले पर अटकी हुई थी। धीरे-धीरे घायल सवारियां बाहर आने लगी। ज्यादातर लोग कराह रहे थे। मोबाइल टॉर्च की रोशनी में एक व्यक्ति ने मुझे देखा तो वह चिल्ला उठा-अरे आपका तो पूरा सिर फट गया है। देखने वाले देख कर ही चिंतित थे। खोपड़ी की हड्डी साफ दिखाई दे रही थी। मेरे पास बेग में मेरा आसन था तथा सोते समय मेरा हाथ आसन बेग पर ही था। सबको मुझ पर बहुत तरस आ रहा था। मैंने गुरुदेव का स्मरण किया और जेब से रूमाल निकाल कर सिर पर बांध लिया। मुझे तनिक भी दर्द महसूस नहीं हो रहा था। मैंने तो रूमाल बांध कर सेल्फी भी ली। सब मुझे पकड़ कर रोड़ पर लाए। थोड़ी देर में पास के गांव के छोटे से

अस्पताल में मुझे ले गए। वहां मेरे सिर की हालत देखकर उन्होंने कहा कि इनका इलाज यहां नहीं हो सकेगा। तुरंत अजमेर ले जाओ। मैं तो गुरुदेव को ही याद किए जा रहा था।

तभी न जाने कहां से एक आदमी जीप लेकर आ गया और मुझ सहित दो तीन घायलों को अजमेर ले चला। वहां जनरल हास्पीटल में मेरे सिर को देखकर सभी करुणा दिखा रहे थे। प्राथमिक उपचार करते हुए कुल 27 टांके मेरे सिर पर लगाए गए। ऐसा करते हुए रात के 3 बज गए। मैं गुरुदेव के भरोसे निश्चिंत था और मेरी दशा देखकर हर व्यक्ति चिंतित। मेरे लिए अनजान शहर था। आगे की बस सुबह ही थी। तभी एक व्यक्ति दुर्घटना के समाचार जानकर यह देखने आया कि कोई परिचित तो नहीं है। उसने मेरी हालत देखी और सिर के बारे में सुना तो मुझे अपनी गाड़ी में बिठाकर उसके घर ले गया। करीब 4 बजे मुझे चाय और बिस्कुट खिलाए। फिर कहने लगा कि तुम इस दशा में बांसवाड़ा कैसे जाओगे?

वहीं से फोन करके उस आदमी ने एक टैक्सी बुलवा ली। न मेरे पास ज्यादा पैसे थे और न कोई पहचान, बस गुरुदेव के नाम का साथ था। उसने मुझे दर्द निवारक गोलियां दी और टैक्सी में सुला दिया। बांसवाड़ा आते वक्त रास्ते भर मैं सोता रहा। दर्द महसूस नहीं हो रहा था। बांसवाड़ा आने पर परिजनों ने देखा तो हालत देखकर बेहोश जैसे हो गये पर मैं पूरे होश में था। न रोया न कराहा। बाद में काफी इलाज हुआ और मैं ठीक हो गया। कितना समय निकल गया पर इस संबंधी कोई तकलीफ नहीं हुई। यह सद्गुरु कृपा एवं उनका रक्षण मेरे जीवन की अद्भुत घटना बन गई। ये सब संयोग गुरुदेव कैसे बैठाते गये यह सोचकर ही रोम रोम अहोभाव से भर जाता है।

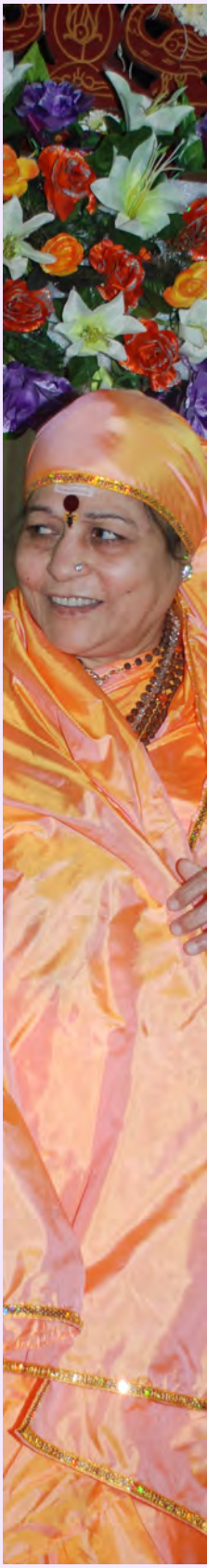

सम्मतियां

1. श्री धवल सोनी, तलवाड़ा

शिव गरिमा ई पत्रिका की ऑडियो फाइल सुनी। बहुत आनंद आया। मन में आ रहा था कि यह कभी खत्म ही न हो। शायद आलस्यवश ही मैंने पत्रिका को अब तक नहीं पढ़ा था। ऑडियो के माध्यम से सुनने का अवसर मिला। बहुत अच्छी अनुभूति हुई एवं बहुत अच्छा लगा। इस पत्रिका को पढ़कर व सुनकर कोई भी साधक गुरु परंपरा एवं गुरुदेव को अच्छी तरह से समझ सकता है। एक एक बात को ठीक से बताया गया है। कोई साधक यदि नियमित साधन से दूर हो रहा हो तो पत्रिका पढ़कर उसके मन में केंद्र, सत्संग एवं साधन का भाव पुनः जागृत हो सकता है।

2. अनिल जोशी, मुंबई

शिव गरिमा मासिक ई-पत्रिका की रचना बहुत ही सुंदर है। वासुदेव कुटुंब के प्रत्येक साधक के लिए यह एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

3. श्रीमती रजनी मिश्रा, कैलिफोर्निया

शिव गरिमा और सद्गुरु शिव की महिमा अद्भुत है। हर महीने शिव गरिमा की आतुरता से प्रतीक्षा रहती है। इसे जितनी बार पढ़ो व सुनो कम ही लगता है। इसके प्रकाशन में लगे साधकों की सेवा को हार्दिक नमन।

4. श्री चंद्रशेखर सुरावधनिवार, रायपुर

शिव गरिमा पत्रिका में गुरुदेव के सुंदर अनुभव, दर्शनीय छवियां, ध्यान साधन से संबंधित लेख व अन्य निर्देश मानो पंच पकवान की थाली पाठकों व श्रोताओं को परोसी गई हो। पत्रिका पठनीय, दर्शनीय व श्रवणीय है। जब भी मैं गुरुदेव के प्रत्यक्ष सान्निध्य से दूर होता हूं तो शिव गरिमा पत्रिका संबल देती है।

श्रीमती विजया जी भट्ट, भिलाई द्वारा शिव त्रिलोचन आश्रम में आयोजित साप्ताहिकी 4 से 11 अप्रैल

अमरकंटक में परमपूज्य टेंबे स्वामी महाराज के पूर्व निर्मित मंदिर का नवीनीकरण व पूजन 12-13 अप्रैल

परमपूज्य श्रीसद्गुरु गुलवणी जी महाराज की मूर्ति का शिव त्रिलोचन आश्रम में आगमन

श्रद्धा समिति, छत्तीसगढ़ द्वारा शिव त्रिलोचन आश्रम में दूसरी साप्ताहिकी 15 से 22 अप्रैल

अक्षय तृतीया पर पूज्य सद्गुरुदेव श्री गुलवणी जी महाराज की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा व स्थापना

श्री जितेन्द्र सिंह जी राठौड़, उदयपुर के निवास
फतह-विलास पर अखंड नाम संकीर्तन

श्री विनय जी शर्मा, उदयपुर के निवास पर अखंड नाम संकीर्तन

अक्षय तृतीया पर उदयपुर के श्री आनंद जी पांडे के आवास पर सत्संग

बिलासपुर में आश्रम के लिए भवन दान करने वाले श्री कृष्णकुमार जी व श्रीमती मनोरमा जी अवस्थी का सम्मान व भवन पर सत्संग

बिलासपुर के साधक श्री संजय जी व श्रीमती मनीषा पाल के नवनिर्मित आवास पर गुरु देव का पदार्पण

दुर्ग-भिलाई निवासी साधक श्री मिलिंद जी व श्रीमती मिताली जी अमृतफले के आवास पर गुरु देव का सत्संग

सूचनाएं

1. शिव—गरिमा पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की मान्यता के अनुसार हैं तथा प.पू.प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही संदेश के उपयोग हेतु हैं।
2. इस पत्रिका की अपने स्तर पर प्रिंट निकाल सकते हैं। विशेष रुप से केन्द्र संचालक एक कॉपी अवश्य केन्द्र पर रख सकते हैं।
3. इस पत्रिका में प्रकाशित फोटो का उपयोग कृपया अन्यत्र बिना अनुमति के न करें।
4. सभी केन्द्र संचालक महानुभावों से अनुरोध है कि इस पत्रिका के पठन हेतु सभी साधकों को प्रेरित करें व अपनी प्रतिक्रिया लिखने को भी कहें।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित काशी शिवपुरी आश्रम,
ईंटालीखेड़ा, तहसील—सलुम्बर, जिला—उदयपुर (राज.)
से प्रकाशित 'शिव—गरिमा' ई—मासिकी, निः शुल्क।
संपादक : स्वामी गुरुराजेश्वरानंद, मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद एवं
स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा), ग्राफिक्सः प्रमोद सोनी,
स्वरः संजय शुक्ला
संपर्क सूत्र : आश्रम : 9929681423,
स्वामी दादाः 9950502409, संपादक : 9414740814

www.prabhubaa.com Prabhu Baa App